# विषय सूची/पाठ्यक्रम


**विषय- संहिता परिचय** 1-37

क. संहिता परिभाषा, प्रकार नामकरण शैली, व्याख्या

ख. संहिता (बृहत्त्रयी) का संक्षिप्त परिचय, इनकी व्याख्या एवं व्याख्याकार, इनके प्रणेता आचार्य

ग. तन्त्रयुक्ति, तन्त्र गुण, तन्त्र दोष

घ. बृहत्त्रयी रचना शैली एवं भाषा शैली

च. अनुबन्ध चतुष्टय

छ. अष्ट प्रश्न

ज. त्रिविध ज्ञानोपाय

**अष्टांग हृदय संहिता सूत्र स्थान अध्याय 1 से 15**

**अध्याय 1 सूत्र आयुष्कामीय** 39-56

1. अष्टांग हृदय परिचय
2. दोष, धातु, मल परिचय
3. अग्नि कोष्ठ स्वरूप
4. रस, वीर्य, विपाक, प्रभाव गुण परिचय
5. रोग आरोग्य स्वरूप
6. रोग आतुर परीक्षा
7. देश एवं काल परिचय
8. चिकित्सा भेद
9. पाद चतुष्टय स्वरूप
10. व्याधि साध्यासाध्यत्व

**अध्याय 2 दिनचर्या** 57-70

1. दिनचर्या-विहार
2. शुद्धि नियम
3. धर्म पालन एवं सद्वृत पालन
4. अध्याय के प्रमुख श्लोक

**अध्याय 3 ऋतुचर्या** 71-84

1. षड्ऋतु वर्णन (उत्तरायण एवं दक्षिणायन सहित ऋतु वर्गीकरण)
2. ऋतुचर्या (षड्चर्या वर्णन)
3. शोधन चिकित्सा
4. ऋतु सन्धि
5. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 4 रोगानुत्पादनीय** **85–94**

1. अधारणीय वेग एवं चिकित्सा
2. धारणीय वेग
3. शोधन चिकित्सा
4. हिताहार विहार सेवन
5. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 5 द्रव द्रव्यादि विज्ञानीय** **95–111**

1. जलवर्ग
2. दुग्ध वर्ग
3. ईक्षु वर्ग
4. मधु वर्ग
5. तैल वर्ग
6. मूत्र वर्ग
7. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 6 अन्न स्वरूप विज्ञानीय** **113–153**

1. शूक धान्य-सामान्य गुण
2. शिम्बी धान्य-सामान्य गुण
3. मांस के सामान्य गुण
4. शाक के सामान्य गुण
5. फल के सामान्य गुण
6. कृतान्न वर्ग-सामान्य गुण
7. औषधियों के सामान्य गुण

**अध्याय 7 अन्नरक्षा** **155–168**

1. राजवैद्य की स्थिति
2. सविष अन्न के लक्षण
3. सविष अन्न औषध
4. विरूद्ध आहार
5. सात्मीकरण कर्म
6. आहार-निद्रा-ब्रह्मचर्य
7. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 8 मात्राशितीय** **169–181**

1. आहार मात्रा
2. हीन-मात्रा, अति मात्रा भोजन दोष
3. अलसक विसूचिका
4. अपतर्पण चिकित्सा
5. अजीर्ण के प्रकार

6. भोजन सम्यक योग
7. कुक्षि विभाग
8. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 9 द्रव्यादि विज्ञानीय** 183–193

1. द्रव्य का श्रेष्ठत्व
2. द्रव्यों का पंचभौतिकत्व
3. पांचभौतिक द्रव्य नाम, गुण
4. द्रव्यों का वीर्य, विपाक प्रभाव सिद्धान्त
5. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 10 रसभेदीय** 195–205

1. षड़रसों की उत्पत्ति
2. षड़ रस परिचय
3. षड़रस, कर्म, गुण एवं अतियोग लक्षण
4. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 11 दोषादि विज्ञानीयम्** 207–222

1. दोष, धातु, मलों का महत्व
2. दोष, धातु, मलों का प्राकृत वैकृत कर्म
3. दोष, धातु, मल, आश्रया आश्रयीभाव
4. दोषधातु, मल, वृद्धि, क्षय सिद्धान्त
5. अग्नि वर्णन
6. रोगोत्पत्ति के सामान्य निदान क्रिया सिद्धान्त
7. ओजस् वर्णन
8. वृद्धि क्षय भेषज
9. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 12 दोष भेदीय** 223–240

1. दोष एवं दोष भेदीय (प्रकार)
2. दोष चय, प्रकोप, प्रशम के कारण
3. रोग के त्रिविध कारण
4. त्रिविध रोग मार्ग
5. आतुर परीक्षा भाव
6. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 13 दोषोपक्रमणीय** 241–253

1. त्रिदोष उपकर्म
2. शुद्ध अशुद्ध चिकित्सा लक्षण
3. दोष गति
4. आम अवधारणा (सामान्य विचार)

5. दशविध औषधकाल
6. प्रमुख श्लोक
7. लंघन पर वर्तमान अनुसंधान ओटोफैगी प्रक्रिया

**अध्याय 14 द्विविधोपक्रमणीय** 255–264

1. लंघन एवं बृंहण उपचार अवधारणा
2. शोधन एवं शमन उपचार अवधारणा
3. अतिस्थौल्य एवं अतिकृश (सामान्य विचार)
4. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 15 शोधनादि गण संग्रह** 265–274

**चरक संहिता सूत्र स्थान 1 से 12**

**अध्याय 1 दीर्घञ्जीवितीय** 275–290

1. आयुर्वेदावतरण
2. रोग का धर्मादि चतुवर्ग प्राप्ति में बाधकता
3. त्रिसूत्र आयुर्वेद
4. षड़ पदार्थ वर्णन
5. आयुर्वेद का लक्षण तथा प्रयोजन
6. आयु का लक्षण एवं पर्याय
7. सामान्य विशेष के लक्षण
8. त्रिदण्ड
9. रोगों के त्रिविध कारण
10. व्याधि का आश्रय तथा आरोग्य के कारण
11. आत्मा के लक्षण
12. शारीर एवं मानस दोष वर्णन
13. साध्यासाध्य विकार चिकित्सा
14. रस वर्णन
15. द्रव्य भेद
16. औषध नाम, रूप, उपयोग ज्ञान
17. चिकित्सा का कर्तव्य
18. भिषगुत्तम के लक्षण
19. श्रेष्ठ भैषज तथा चिकित्सक
20. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 2 अपामार्ग** 291–295

1. शिरोविरेचन द्रव्य एवं प्रयोग निर्देश
2. वमन द्रव्य एवं प्रयोग निर्देश
3. विरेचन द्रव्य एवं प्रयोग निर्देश
4. अनुवासन द्रव्य एवं प्रयोग निर्देश

5. अष्टविंशति यवागू
6. पंचकर्म महत्व एवं वैद्य के गुण
7. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 3 आरग्वधीय** 297–300

1. बत्तीस सिद्धचूर्ण, प्रदेह वर्णन एवं प्रयोग निर्देश

**अध्याय 4 षड़विरेचन शताश्रितीय** 301–316

1. षड़ विरेचन आश्रय
2. पंचकषाय योनि
3. पंचविध कषाय कल्पना
4. पंच कषाय शतानि (पचास महाकषाय एवं पांच सो द्रव्य)

**अध्याय 5 मात्राशितीय** 317–330

1. मात्रावत् आहार
2. आहार स्वरूप (गुरु लघु)
3. आहार मात्रा
4. मात्रावत आहार फल
5. आहार सेवन विधान सिद्धान्त
6. स्वस्थवृत्त
7. अंजन
8. धूमपान
9. नस्य
10. दन्तधावन
11. जिह्वा निर्लेखन
12. गण्डूष
13. अभ्यंग
14. परिमार्जन
15. वस्त्र, गन्ध माल्यादि धारण
16. शौच विधि
17. क्षौर कर्म
18. पादत्राण धारण
19. छत्र धारण
20. प्रमुख श्लोक
21. दिनचर्या का सर्केडियन रिद्म बनाने में भूमिका
22. अभ्यंग की ऊतक पोषण में भूमिका
23. गुण युक्त भोजन यान्त्रिक प्रक्रिया से संतुष्टी (सौहित्य मात्रा)

**अध्याय 6 तस्याशितीय** 331–338

1. संवत्सर विभाग
2. विसर्गकाल

3. आदान काल
4. षड्ऋतु विवेचन एवं चर्या
5. हंसोदक
6. सात्म्य
7. प्रमुख श्लोक
8. कर्क संक्रान्ति (उत्तरायण) एवं मकर संक्रान्ति दक्षिणायन होने का कारण (एवं 21 मार्च एवं 23 सितम्बर दिन बड़े होने के कारण, पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा)

**अध्याय 7 नवेगान्धारणीय** 339–349

1. अधारणीय धारणीय वेग लक्षण एवं चिकित्सा
2. व्यायाम
3. अहित सेवन एवं वर्ज्य विधि
4. आगन्तुज एवं प्रज्ञापराध जन्यरोग एवं चिकित्सा
5. प्रमुख श्लोक
6. प्रकृति वर्गीकरण (अनुसंधान)

**अध्याय 8 इन्द्रियोपक्रमणीय** 351–359

1. इन्द्रिय संख्या, इन्द्रिय द्रव्य, अधिष्ठान, अर्थ (शब्दादि) बुद्धि वर्णन
2. मन के लक्षण
3. मन का एकत्व
4. सात्विक, राजस एवं तामस मन
5. इन्द्रिय पंचपंचक
6. अध्यात्म द्रव्य, गुण संग्रह
7. महाभूत एवं इन्द्रिय सम्बन्ध
8. प्रकृति विकृति हेतु
9. सद्वृत अनुष्ठान
10. हेतुचतुष्टय
11. अनुक्त सदवृत
12. प्रमुख श्लोक
13. माइक्रोब्रायोम संरचना एवं मानसिक स्वास्थ्य

**अध्याय 9 खुड्डाक चतुष्पाद** 361–372

1. चिकित्सा चतुष्पाद
2. रोगारोग्य लक्षण
3. चिकित्सा लक्षण
4. वैद्य, द्रव्य, परिचारक, आतुर गुण
5. वैद्य का प्रधानत्व
6. अयोग्य चिकित्सा दोष
7. सद्वैद्य लक्षण

8. वैद्य कर्तव्य
9. वैद्य वृत्ति
10. प्रमुख श्लोक
11. चिकित्सकीय विद्यार्थी की मृदु कौशल प्रगति, चिकित्सकीय आचार सिद्धान्त, चिकित्सकीय शिक्षा में भावात्मक बुद्धिमता

**अध्याय 10 महाचतुष्पाद** **373–375**

1. चतुष्पाद भेषज युक्तियुक्त आरोग्य वृत्ति है (आत्रेय)
2. भेषज अभेषज तुल्यत्व प्रतिपादन (मैत्रेय)
3. आत्रेय का समाधानात्मक निष्कर्ष
4. परीक्ष्य कारिणोहि कुशला भवन्ति
5. चिकित्सा सूत्र
6. चिकित्सा में यशोलाभ का कारण
7. असाध्य रोग चिकित्सा करने से हानि
8. साध्य असाध्य (वर्गीकरण)
9. सुख साध्य लक्षण
10. कृच्छ्रसाध्य लक्षण
11. याप्य लक्षण
12. प्रत्याख्येय लक्षण
13. रोग रोगी परीक्षा संक्षिप्त ज्ञान
14. मिथ्या ज्ञान (मैत्रेय बुद्धि)
15. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 11 त्रिस्त्रैषणीय** **377–388**

1. त्रिविध ऐषणा–प्राणैषणा, धनैषणा
2. परलोकैषणा
3. चतुर्विध परीक्षा
4. चतुर्विध परीक्षा से पुनर्जन्म सिद्धि
5. त्रयोपस्तम्भ
6. त्रिविधबल
7. त्रिविध आयतन
8. अर्थ कर्म एवं काल का हीन मिथ्याति योग
9. त्रिविध रोग
10. मानस रोग चिकित्सा
11. त्रिविध रोग मार्ग
12. त्रिविध वैद्य
13. उपसंहार में अष्टत्रिक
14. प्रमुख श्लोक

**अध्याय 12 वात कलाकलीय** **389-392**

1. वात गुण
2. वात के गुण कर्म विषय विभिन्न आचार्यों के विचार
3. वायु प्रकोप प्रशम कर्म
4. अकुपित कुपित वात कर्म
5. वात दोष का चिकित्सकीय कर्म
6. कुपित कफपित्त कर्म
7. त्रिदोष पर आत्रेय का समन्वयात्मक दृष्टिकोण
8. प्रमुख श्लोक